अन्तर्निहित सामर्थ्य से परिपूर्णतातक
सिद्धयोग विद्यार्थी गोपी एवं कृष्ण मॉरेर की ओर से पत्र

१ मई, २०१६

प्रियजनो,

बाबाजी के १०८वें जन्मदिवस की शुभकामनाएँ!

Buon Compleanno di Baba, a 108 anni dalla sua nascita!

બાબાજીના ૧૦૮માં જન્મદિવસની શુભકામનાઓ!

बाबाजींच्या १०८ व्या जन्मदिवसा च्या शुभेच्छा!

Alles Gute zu Babas 108. Geburtstag!

इस माह, सिद्धयोग पथ पर हम बाबा मुक्तानन्द के जन्म की १०८वीं मंगलमय वर्षगाँठ मना रहे हैं। अपनी उपस्थिति, अपनी सिखावनियों तथा अपने संकल्प द्वारा हमारे परमप्रिय बाबा जी ने हज़ारों साधकों को आत्मा के अनुभव के प्रति जाग्रत किया। बाबा जी ने सिद्धयोग पथ को, अपने जीवन काल में और साथ-ही आने वाली पीढ़ियों सहित सभी के लिए सुलभ करा दिया।

मई माह में, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के रूप में हम 'होना' इस शब्द पर अन्वेषण करते हुए वर्ष २०१६ के लिए श्री गुरुमाई के सन्देश पर अपना अध्ययन जारी रखेंगे। श्री गुरुमाई का सन्देश है :

परमानन्द में
स्थिर होने की दिशा में
दृढ़ता के साथ
आगे बढ़ो

'होना' शब्द के लिए सन्देश में अंग्रेज़ी शब्द है 'बिकमिंग'। हमें अंग्रेजी भाषा में 'बिकमिंग' ['होना'] का अर्थ स्पष्ट करने वाली कई उद्‌बोधक परिभाषाएँ और पर्यायवाची मिले। जैसे :

- परिवर्तन या उन्नति की प्रक्रिया से गुज़रना
- [में] रूपान्तरित होना
- प्रगतिशील होना

- [में] विकसित होना
- परिपक्व होना
- [में] अनुभवी होना
- अस्तित्व में आना, बनना या हो जाने की स्थिति में आना

श्री गुरुमाई के सन्देश के सन्दर्भ में, 'होना' का अनुवाद फ्रेंच भाषा में 'डेवेनिर'होता है। नॉर्वे की भाषा में इसे 'ओ ब्ली', फिलिपीनो [फिलिपीन की भाषा] में इसे 'पगीगिंग', तमिल में इसे 'औंनरीवाला' और यूनानी में इसे 'जीनसे' कहते हैं। आपकी भाषा में 'होना' का अर्थ क्या होता है?

प्राचीन यूनानी दार्शनिक, अरस्तू ने 'होना' को इस प्रकार परिभाषित किया है —कोई भी गतिशीलता जो अन्तर्निहित सामर्थ्य से परिपूर्णता तक ले जाती है। सिद्धयोग पथ पर हमारे लिए परिपूर्णता का, साक्षात्कार का अर्थ है, अपने में एवं दूसरों में ईश्वर की उपस्थिति का अविचल बोध। हम यह भी समझते हैं कि हर एक मनुष्य में साक्षात्कार प्राप्त करने की सामर्थ्य है। अपने श्रीगुरु की कृपा और साधना के लक्ष्य के प्रति समर्पण द्वारा, बाबा जी ने मानवीय सामर्थ्य के उच्चतम स्तर की प्राप्ति कर ली। वे आत्मा के आनन्द के साथ एक हो गए। फिर उन्होंने अपना जीवन, दूसरों को आत्मसाक्षात्कार कराने हेतु मार्गदर्शित करने के लिए समर्पित कर दिया।

'होना' शब्द पर मनन करते हुए हमें स्मरण हो आता है कि हम कौन थे, जब प्रथम बार हमने बाबा जी की यह सिखावनी सुनी थी : "आपका सम्मान करो।आपको पूजो। आपको ध्याओ। आपका राम, आपमें आप होकर रहता है।" और हम इस बात की सराहना करते हैं कि श्री गुरुमाई के सन्देश के अपने अध्ययन और अभ्यास द्वारा हम क्या बनतेजा रहे हैं।

सन् १९७५ में जब बाबा जी अपनी दूसरी विश्व यात्रा के दौरान अमेरिका आए थे, उस वर्ष वसन्त ऋतु में हम दोनों ने व्यक्तिगत रूप से सिद्धयोग पथ का अनुसरण करना आरम्भ किया। पहले कृष्ण आपको बाबा जी से अपनी उस भेंटके बारे में बताएँगे जो अप्रैल में न्यू मैक्सिको के अल्बकर्की शहर में हुए, एक परिचयात्मक सत्संग में हुई थी :

> सत्संग के लिए मैंने अपनी पसन्दीदा कमीज़ पहनी और अच्छी तरह बाल बना लिए। मुझे याद है कि आइने में खुद को देखते हुए मैंने सोचा था कि मैं सच में अच्छा दिख रहा हूँ! उस दिन मैं बाबा जी के सामने रखे माइक्रोफ़ोन के पास जाकर खड़ा हो गया और मैंने पूछा : "बाबा जी, क्या आप मुझे अपने अभिमान से छुटकारा पाने में मेरी मदद कर सकते हैं?"

बाबा जी ने मुझे एक नज़र देखा और उत्तर दिया, "किस बात का अभिमान है तुम्हें?" वे रुके और फिर मुस्कराते हुए उन्होंने पूछा, "तुम बीटल्स्समूह से हो क्या? क्या तुम एक अन्तरिक्ष यात्री हो?"और फिर, मुझे बड़ी खुशी और आश्चर्य हुआ जब उन्होंने मुस्कराकर ऐसे पूछा जैसे कि वे जानते हों, "या तुम्हें अपनी कमीज़ या अपने बालों का अभिमान है?"

सब लोग हँसने लगे और मैं भी हँसने लगा, और मैं यह भी जान गया था कि मुझे अपने श्रीगुरु मिल गए हैं। कुछ ही शब्दों के द्वारा बाबा जी ने मुझे दिखा दिया था कि इस बारे में मेरी सीमित समझ कि मैं कौन हूँ, उससे ऊपर उठने में वे मेरी सहायता कर सकते हैं। अपनी विनोदप्रियता से, बाबा जी ने मेरे लिए,उनका प्रेम व मार्गदर्शन प्राप्त करना कितना आसान बना दिया था। मैंने अगले सप्ताहान्त में होने वाले शक्तिपात् ध्यान शिविर के लिए पंजीकरण करा लिया।

गोपी, मई माह में बाबा जी के जन्मदिवस महोत्सव पर ओकलैण्ड के सिद्धयोग आश्रम में उनसे मिलीं :

मेरे पहले शक्तिपात् ध्यान शिविर में, बाबा जी के साथ प्रश्नोत्तरी का एक सत्र था। जब मेरा प्रश्न ज़ोर-से पढ़ा जा रहा था तब मैं काफ़ी गम्भीर मुद्रा में बाबा जी के सामने बैठी हुई थी : "बाबा जी, कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि आप मुझे पसन्द नहीं करते। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं? क्या आप इसमें मेरी मदद करेंगे कि मैं स्वयं के प्रति करुणाशील होना सीखूँ?"

अपनी आँखों में एक बड़ी चमक के साथ बाबा जी ने मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा और बहुत ही मधुरता से कहा, "तुम यह कैसे सोच सकती हो कि मैं तुम्हें पसन्द नहीं करता जबकि मैं तुम्हें बहुत पसन्द करता हूँ?" मेरा हृदय द्रवित होने लगा, तब उन्होंने आगे कहा, "हाँ, मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। पर तुम्हें स्वयं के प्रति करुणाशील होना होगा। अन्यथा, मैं तुम्हें पसन्द नहीं करूँगा!"

ध्यान-कक्ष में हँसी फूट पड़ी। अचानक ही वह कक्ष एकदम उल्लसित लगने लगा। मैं अपने स्थान पर वापस आ गई और मुझे जो प्राप्त हुआ था उसे आत्मसात् करने लगी। यदि मुझे इस बात पर विश्वास करना है कि दूसरे मुझे पसन्द करते हैं, तो मुझे खुद को पसन्द करना सीखना होगा। बाबा जी ने अपने प्रेम, विनोदप्रियता और प्रज्ञान द्वारा मुझे ठीक वही दिया जिसकी मुझे अवश्यकता थी, जिससे मैं बिलकुल वैसी बन सकूँ, जैसा बनने की मेरे अन्दर लालसा थी।

हमारी ही तरह, जो लोग बाबा जी से मिले हैं, उन्हें, "बाबा जी के साथ हुए प्रसंग" सुनाना बहुत अच्छा लगता है –उनके जीवन पर बाबा जी के प्रभाव के प्रसंग। हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप इस माह सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बाबा जी के विषय में प्रकाशित होने वाली झलकियों को देखें, पढ़ें और अपने रूपान्तरण के अनुभव दूसरे सिद्धयोगियों के साथ बाँटें।

श्री गुरुमाई के सन्देश में शब्द 'होना', हमें यह याद दिलाता है कि हम में रूपान्तरण की सामर्थ्य सदैव विद्यमान है। इस पर विचार करते समय हमें यह स्मरण हुआ कि श्री गुरुमाई इस बात पर बल देती हैं कि अभ्यास ही हमारी साधना की कुञ्जी है। श्री गुरुमाई हमें नए-नए तरीके खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे हम सिद्धयोग की सिखावनियों को अंगीकार कर सकें। उदाहरण के लिए, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट हमें कई अवसर उपलब्ध कराती है, जैसे कि पाठ्यक्रम, सत्संग, रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ, प्रकृति के फ़ोटोग्राफ़, इत्यादि।

हमारे "होने" या बन जाने के विषय में — हमारे अन्तर-रूपान्तरण के विषय में —जागरूक रहना, हमें सिखाता है कि हम हर दिन, हर क्षण जो छोटे-छोटे चुनाव करते हैं, उन पर हम ध्यान दें।

जागरूकता से लिए गए श्वास से हमें अवसर मिलता है कि हम रुकें और चुनाव करें : इस क्षण में जो आवश्यक है, उसके प्रति मुझे कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए? इस समय मुझे अपने विचार प्रकट करने चाहिए या चुप रहना चाहिए? चीज़ें जिस तरीके से होनी चाहिए, उससे सम्बधित अपने विचारों में क्या मैं खुलापन रख सकता हूँ?जब मैं चिन्तित होता हूँ या आलोचनात्मक होता हूँ, तब क्या मैं अपने उन विचारों को छोड़कर मन्त्र की ओर मुड़ सकता हूँ?इस प्रकार ध्यान देकर, हम धीरे-धीरे ऐसे चुनाव करने की अपनी क्षमता को विकसित करने लगते हैं जो परमोच्च लक्ष्य तक पहुँचने में हमारी मदद करते हैं।

अब हम देख पा रहे हैं कि श्री गुरुमाई के सन्देश में 'होना' शब्द कर्मरत होने का आवाहन है, जो हमें प्रोत्साहित कर रहा है कि हम उस रूपान्तरण का मूर्तरूप बनें जिसका अनुभव हम सिद्धयोग पथ पर करते हैं।

इस माह, बाबा जी के जन्मदिवस का सम्मान करने और 'होना' शब्द पर मनन-चिन्तन करने के लिए हमारे पास कई अवसर होंगे। मानवीय सामर्थ्य का सत्य जिसे बाबा जी ने प्रकट किया, वही बाबा मुक्तानन्द के १०८वें जन्मदिवस महोत्सव पर होने वाले सार्वभौमिक सिद्धयोग ऑडिओ सत्संग का केन्द्रण है, जिसका शीर्षक है, 'अपनी पूर्णता में विश्वास रखो'। यह सत्संग इस माह वेबसाइट पर और सिद्धयोग आश्रमों, ध्यान-केन्द्रों तथा संकीर्तन एवं ध्यान केन्द्रों पर आयोजित किया जाएगा।

हम सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बाबा जी की सिखावनियों का अध्ययन भी कर सकेंगे। और_१४ मई को गुरुदेव सिद्धपीठ से सीधे ऑडिओ प्रसारण द्वारा 'आनन्द के स्रोत, मध्य तक पहुँचने के मार्ग' नामक ध्यान-सत्रों की शृंखला के चौथे सत्र में भाग ले सकते हैं।

हम विश्वभर में सभी को शुभकामनाएँ देते हैं कि आपका मई माह सुखद हो और परिपूर्णता से भरा हो। बाबा जी के जन्मदिवस का हमारा महोत्सव तथा 'होना' शब्द का हमारा अध्ययन, हम सबको उन्नत करे और रूपान्तरित करे।

शुभकामनाओं सहित,

गोपी एवं कृष्ण मॉरेर
सिद्धयोग विद्यार्थी

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन®।सर्वाधिकार सुरक्षित।